कहानी

नेपथ्य

- अंजना वर्मा

ऋचा की आँखें खुलीं तो उसने देखा कि सुबह की धूप खिड़की के पर्दों के नीचे से झाँकती हुई भीतर आने की ज़िद कर रही थी। धूप की यह ज़िद उसे बहुत अच्छी लगती थी- मानो धूप एक मनमौजी बच्ची हो, जो पर्दे के अनुशासन में रहने के लिए तैयार न हो। उसे कमरे में आना है, तो आना है। उसने उठकर पैरों में फर वाली स्लीपर पहनी और खिड़की के पास जाकर पर्दे सरका दिये। धूप पूरे कमरे में आकर उछल-कूद करने लगी। कमरा उजास से भर गया।

अजय ने आकर साइड टेबल पर चाय की ट्रे रख दी और चुपचाप चला गया।ऋचा ने सिल्वर टीपॉट से दो कपों में अपने और मयंक के लिए चाय ढाली। लीकर में थोड़ा दूध मिलायाऔर एक चम्मच चीनी डालकर उसकी ओर बढ़ा दिया और स्वयं चाय का बिना चीनी वाला कप हाथ में लेकर दो-चार ही सिप ले पाई थी कि भावना का फोन आ गया। उसे ताज्जुब हुआ कि सवेरे-सवेरे वह कैसे फोन कर रही है?

उधर से बहुत कमजोर आवाज आ रही थी," हलो ! ऋचा कैसी हो?"

"मैं तो ठीक हूँ। तुम अपना बताओ। सुबह-सुबह फोन कैसे किया?" ऋचा ने कहा।

"क्या बताऊँ?... चार दिनों से बुखार में हूँ।" भावना बोली।

"बुखार में ? तभी कहूँ कि तुम्हारी आवाज क्यों काँप रही है ?"

"सक्षम तो स्कूल चला जाता है। उसके बाद घर में मैं ही बच जाती हूँ अकेली। तुम्हें तो मालूम ही होगा कि मनीष शहर से बाहर गया हुआ है महीने-भर के लिए। अब दिन-भर कोई देखने वाला नहीं... चुपचाप पड़ी रहती हूँ बिस्तर में । बुखार उतर भी तो नहीं रहा। समझ में नहीं आता है क्या करूँ?"

"अच्छा, किसी डॉक्टर को दिखाया है?"

"नहीं, अभी तक तो नहीं दिखा पाई हूँ।"

"बुखार है और अभी तक डॉक्टर को भी नहीं दिखा पाई हो ? तो पहले क्यों नहीं कहा ? ओके , चिंता मत करो, भावना ! मैं आ रही हूँ तुमसे मिलने।"

फोन रिसीव करने के बाद ऋचा ने नहाकर उसने एक बहुत सादा-सा सूट पहन लिया और जाने लगी तो मयंक ने उससे पूछा,"कहाँ जा रही हो, ऋचा?"

"भावना की तबीयत ठीक नहीं है। उसीको देखने जा रही हूँ। बीमार पड़ी हुई है और अकेली भी है बिचारी।"

मयंक ने कहा," और मनीष? वह कहाँ है?"

"आजकल शहर से बाहर गया हुआ है।"

"ओह! तो जाओ... जरूर देख आओ। तुम्हारी दोस्त है और अभी तो उसका पति भी उसके साथ नहीं है। तुम्हें देख लेना चाहिए जाकर।"

फिर रुककर उसने पूछा, "नाश्ता कर चुकी हो या ऐसे ही निकल रही हो?"

" मैंने एक सेब ले लिया है । तुम नाश्ता कर लेना।"

ऋचा सोचे बिना न रह सकी कि मयंक उसका कितना ख्याल रखता है। वह बस उसके हित की ही बात करता है , बाकी बेकार की रोक-टोक मयंक की ओर से नहीं होती थी। इसीलिए उसकी सहेलियाँ उससे ईर्ष्या करतीं , लेकिन अपनी भड़ास बड़े प्यार से निकालतीं ," तुम्हें तो कहीं आने-जाने के लिए मयंक की ओर से खुली आजादी मिली हुई है। जो करो...जो पहनो...जो खाओ। एक हम हैं कि बाहर निकलेंगी तो हज़ार बार पूछा जाएगा- कहाँ जा रही हो ? कब तक आओगी ? क्या करोगी? "

ऋचा ने कहा,"अरे नहीं, ऐसा मत सोचो। पतियों का चिंतित रहना गुनाह है क्या? इसलिए वे पूछते हैं कि तुम्हें कभी मुश्किल का सामना न करना पड़े। तुम्हारी सुरक्षा के लिए ही तो वे करते हैं ऐसा? यह भी प्यार ही है... प्यार का एक रंग!"

कभी-कभी तो उसके भी जी में आता कि मयंक भी कुछ टोका-टोकी करता। थोड़ी अपनी पसंद उस पर लादता। जैसे -- ऐसा करो या मेरे लिए ऐसे कपड़े पहन लो। तुम पर यह हेयर स्टाइल अच्छी लगती है

या अपना यही हेयरस्टाइल रखो। पर मयंक ऐसा कुछ भी नहीं कहता था - यह बात उसे कुछ दुखी कर जाती।

ऋचा कार स्टार्ट कर निकल गई। उसे ड्राइविंग का शौक कॉलेज के दिनों से ही था। उसके पिता ने उसे ड्राइविंग सिखाई थी और अपनी कार उसके हवाले कर दी थी। तब वह कार चलाने के हजार बहाने ढूँढती। कभी पिता को ऑफिस छोड़ देती, तो कभी माँ को शॉपिंग करवा देती। शादी के बाद उसके

पिता ने अपने बेटी-दामाद को नई कार में बिठाकर विदा किया था। कार मिली थी उसे और उससे अधिक खुश हुआ था मयंक। उसे याद है कि कार देखकर उसकी आँखों में कैसी चमक आ गई थी और वह किसी-न-किसी बहाने दिन-भर कार के पास जाकर विभिन्न कोणों से उसे देखता रहता था। पर यह वर्षों पुरानी बात हो गई थी। अभी तो वह पुरानी कार कम ही इस्तेमाल होती थी और गराज में ही पड़ी रहती थी।

शहर के समृद्ध-सम्मानित व्यक्ति की इकलौती संतान होने के कारण ऋचा को अपने माता-पिता की ओर से प्यार के साथ-साथ वह सब मिला था जिसे जोड़ते -जोड़ते लोग अपनी आधी ज़िंदगी गँवा देते हैं। उसे कुछ कहने की जरूरत पड़ती ही नहीं थी कभी। मुँह से कुछ निकला और चीज़ें हाज़िर!

अकेली संतान होने के कारण वह अपने पिता की

अकेली वारिस भी थी। फिर भी धन का घमंड उसे नहीं था और सुखी-सुरक्षित जीवन मिलने के कारण वह छल-प्रपंचों से भी अनजान थी। उसे लगता था कि दुनिया में जो चीज जैसी दिखाई देती है वैसी ही होती है।

मयंक के स्नेहिल व्यवहार से वह अपने को खुशकिस्मत समझती कि मयंक जैसा खुले विचारों वाला जीवन साथी उसे मिला। जब यह सब सोचने लगती तो नजरें घुमाकर देखती कि कौन है उसके जैसा? कोई नहीं।

अभी मयंक द्वारा उपहार में मिली नई कार ड्राइव करते हुए उसे मज़ा आ रहा था। इसी साल मयंक ने उसके जन्मदिन पर भेंट की थी। कितनी स्मूथ चल रही थी गाड़ी ! जैसे सड़क पर फिसल रही हो ! मन- ही-मन उसने कहा, "थैंक यू मयंक !"

भावना के यहाँ पहुँचकर उसने बेल बजाई तो भावना ने दरवाजा खोला। सामने ऋचा को हाथों में फलों का बड़ा-सा पैकेट पकड़े देखकर उसके बीमार चेहरे पर मुस्कुराहट फैल गई।वह बोल पड़ी, "आओ ऋचा! मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रही थी। और यह क्या उठा लाई तुम?"

ऋचा हँसते हुए बोली,"ताज़े-ताज़े फल.... इसलिए कि तुम खाओ और जल्दी से अच्छी हो जाओ। तुम्हारे लिए और कौन ला देगा? यहाँ मनीष तो है नहीं, फिर?"

"हाँ, वह बात तो है ऋचा ! मैं कभी अकेली नहीं रही। तुम तो जानती ही हो। इसीलिए मुझे परेशानी भी हो रही है। चलो, अब तुम्हें देखकर ही लग रहा है कि मैं अच्छी हो जाऊंगी। मेरा बुखार तो अभी ही भाग गया ...तुम्हारे आते ही।... अच्छा हुआ कि मैं बीमार पड़ गई। इसी बहाने तुम मिलने तो आ गई?"

इस पर दोनों खिलखिला पड़ीं।

ऋचा ने कहा,"अच्छा...यह क्या बात हुई ? तुम बीमार नहीं पड़ती तो मैं नहीं आती क्या? बताओ कैसी हो?"

"अभी तो मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं बिल्कुल ठीक हूँ। तुम्हारे आने के पहले बुखार था, जब फोन किया था तब।अभी शायद नहीं है।"

"ठीक है। पर तुम्हें आराम करना चाहिए। मैं शाम तक तुम्हारे साथ रहूंगी।"

"चलो...बहुत अच्छा है। बहुत दिनों बाद आई हो।"

ऋचा भीतर आई तो देखा उसका बेटा सक्षम मेज पर बैठा पढ़ रहा था। उसने पूछा,"आज सक्षम स्कूल नहीं गया?"

"हाँ, आज इसकी तबीयत ठीक नहीं है।"

दोनों सखियाँ आराम से बिस्तर पर बैठ गईं और बातें करने लगीं। दोनों कॉलेज में साथ-साथ पढ़ी थीं। अतः उन दिनों की बातें करने में ही अधिक रस मिलता था । उन दिनों की शरारतें याद कर अभी भी दिल में आनंद की फूलझड़ियाँ छूटने लगती थीं । कौन प्रोफेसर कैसे लगते थे? कैसा पढ़ाते थे ? कौन लड़का किसको घूरता था? कौन किसके चक्कर में था? पुरानी बातों को याद करने में दोनों मशगूल थीं।

ऋचा को आए अधिक समय नहीं बीता कि उसका मोबाइल बज उठा । मयंक का कॉल था। मोबाइल की स्क्रीन पर मयंक का नाम आया तो भावना मुस्कुरा उठी,"लो अब लगता है कि मयंक का दिल नहीं लग रहा है तुम्हारे बिना ! इसीलिए तो फोन कर बैठा।"

ऋचा ने कहा, "ऐसा कुछ नहीं है। कोई बात होगी... इसीलिए फोन कर रहा है।"

पर भीतर-ही-भीतर उसे गर्व हुआ अपनी किस्मत पर। सचमुच मयंक का दिल नहीं लग रहा है उसके बिना? ओह! कितने सुकून की बात है!

उसने फोन रिसीव करते हुए कहा, "हलो मयंक? "

उधर से मयंक की आवाज आई, "ऋचा ! तुम ठीक तो हो?"

यह सुनकर उसे लगा जैसे अमृत-वर्षा हो गई। दिल भींग गया फुहार से। उसने कहा, "हाँ- हाँ, मैं बिल्कुल ठीक हूँ। पर अचानक क्यों पूछ रहे हो ऐसा?"

मयंक ने कहा,"सुनो... अब लौट आओ जल्दी।"

"क्यों..? क्या बात हो गई? आधे घंटे के लिए भी घर से बाहर निकलूँ तो आसमान उठा लेते हो सर पर!""

" अरे नहीं ! अब सुनो भी...कुछ असामाजिक तत्वों के कारण शहर की स्थिति खराब हो गई है। "

" अच्छा? ...क्या हुआ यह तो बताओ!"

"शहर में जगह-जगह हंगामा हो रहा है। वह जो अपहरण वाली घटना हुई थी न ? उसीके विरोध में । हो सकता है कर्फ्यू भी लग जाए । अभी पता चला है कि रास्ते ब्लॉक किए जा रहे हैं। तुम जल्दी से आ जाओ।"

यह सुनकर वह घबरा गई। उसने कहा, "क्या कह रहे हो मयंक? अचानक ऐसा कैसे हो गया ?"

"अभी जो कहा है उसे गंभीरता से लो। तुमको देर बिलकुल नहीं करनी चाहिए ।अभी चल दो वहाँ से।"

"ठीक है। मैं आ रही हूँ...बस अभी।"

पालथी मारकर बिछावन पर आराम से बैठी हुई ऋचा मयंक का फोन रिसीव करते ही अचानक उठ खड़ी हुई थी ।

घबराकर उसने भावना से कहा, " अब मुझे जाना पड़ेगा,भावना ! शहर में जगह-जगह हंगामा शुरू हो गया है।"

"क्या ?... क्या हुआ कुछ बताओ भी तो?"

"नहीं, अभी बताने का समय नहीं है। वह सब बाद में बताऊंगी तुम्हें ...फोन पर...भावना ! अभी चलती हूँ । अपना ख्याल रखना।"

जब तक भावना कुछ समझ पाती, तब तक ऋचा कार स्टार्ट कर चुकी थी। वह घबराते हुए कार लेकर मुख्य सड़क पर निकल आई यह सोचते हुए कि पता नहीं रास्ते में क्या देखने को मिले? किन परिस्थितियों का सामना करना पड़े ! क्या होगा आज?

भावना के यहाँ आते समय सारी दुकानें खुली हुई थीं और सड़क वाहनों से भरी थी। लोगों का आना-जाना लगा हुआ था। पर अभी तो सड़क पर पूरी तरह से सन्नाटा छाया हुआ था और दुकानों के शटर गिर चुके थे। कहीं-कहीं कुछ मवाली झुंड में खड़े हुए दिखाई दे जाते थे।

सड़क पर निकल तो आई , पर इतना सबकुछ देखने के बाद जब दिल घबराने लगा तो लौटने का विकल्प उसके पास नहीं था। जितना अपने घर पहुँचना मुश्किल था , उतना ही मुश्किल था भावना के घर लौटना भी। वह अकेली थी और अकेले ही अपना रास्ता तय करना था उसे। वह नि:शब्द कार ड्राइव कर रही थी-- अपने साथ कुछ भी हो सकने का भय लिए हुए। इसी रास्ते से वह अक्सर आया-जाया करती थी। लेकिन आज सड़क जनशून्य थी और जगह-जगह ईंट-पत्थर और रोड़े बिखरे हुए थे। लगता था जैसे थोड़ी देर पहले रोड़ेबाजी हुई हो। तभी उसे सड़क पर साइकिल की जलती हुई टायर दिखाई पड़ी, जिसकी केसरिया लपटों से काला धुआँ निकल कर हवा में मिल रहा था। ईटों से सड़क को भी बंद कर दिया गया था। कुछ मवाली सड़क के किनारे खड़े थे और कार ड्राइव करती हुई एक अकेली आतंकित औरत को देखने का मज़ा ले रहे थे कि देखें, अब इस विकट परिस्थिति में क्या करती है यह अबला? ऋचा ने सोचा कि काश ! वह रुक गई होती भावना के यहाँ तो इस मुसीबत से बच जाती । यह ख़्याल उसके दिमाग में क्यों नहीं आया? शायद इसलिए कि वह बेहद घबरा गई थी कि क्या करे? कोई निर्णय नहीं ले पाई थी उस क्षण।

अब उसने देखा तो सामने उसकी सड़क ईंटों से बंद थी। कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि आगे कैसे जाए? कोई और दिन होता तो सड़क के लोग भी मदद करते ,लेकिन आज तो शहर का रंग ही बदला हुआ था ! अब आगे जाने के लिए कार रोककर उसे उतरना ही पड़ेगा; नहीं तो गाड़ी यहीं रुक जाएगी और उतरते ही न जाने क्या हो जाए? चारों ओर तोड़-फोड़, ईंट-पत्थर, दिन-दहाड़े भयावह निर्जनता ! ऐसा नज़ारा उसने अपनी ज़िंदगी में कभी नहीं देखा था।

धड़कते हुए दिल से उतरी वह । एक-एक कर सारी ईंटें सड़क के किनारे फेंकी। सामने पेड़ की डाली थी जिसे रखकर सड़क को जाम कर दिया था उपद्रवियों ने। उसने उसे भी खींचकर एक ओर किया और अपना रास्ता साफ किया। फिर घबराकर गाड़ी के खुले दरवाजे की ओर लपकी। इसी हड़बड़ी में उसने एक चोरनजर गुंडों पर डाली, जो शटरबंद दुकानों के नीचे खड़े उसका तमाशा देख रहे थे। कहीं वे दौड़कर उसके पास ना आ जाएँ, इस भय से आक्रांत होकर कार में बैठने लगी तो बदहवासी में गिर गई और उसका माथा फूट गया, जिसका ज़रा भी एहसास उसे उस समय तो नहीं हुआ; क्योंकि उसे तो जल्दी-से-जल्दी कार में बैठकर निकल जाना था वहाँ से। गिरने के दूसरे ही पल वह उठकर सीट पर बैठ गई और बैठते ही कार स्टार्ट कर दी। जब गाड़ी चल पड़ी तो उसकी जान में जान आई। तब उसे लगा कि वह आज बच गई। कार के मिरर में उसने देखा कि उसके सिर से खून बह रहा था। उसने ध्यान नहीं दिया। अभी ज़रूरी था जल्द-से-जल्द घर पहुँचना ख़तरनाक दृश्यों के बीच से गुजरती हुई उसकी कार जब अपनी गली में मुड़ी तो उसने राहत की साँस ली।

मयंक को बरामदे पर बैठे हुए देखकर उसे बहुत चैन मिला कि वह घबराकर उसकी राह देख रहा था। उसका जीवन साथी उसकी सुरक्षा के लिए बेचैन था। इतनी फिक्र थी उसे उसकी?

कार से उतरकर वह कलेजे पर हाथ रखे हुए घर की सीढ़ियाँ चढ़ी और थहराकर वहाँ रखी कुर्सी पर बैठ गई । अभी भी भय से उसका पूरा शरीर किसी लतर की तरह काँप रहा था ! पता नहीं किस तरह वह भावना के घर से यहाँ तक ड्राइव करके चली आई थी ? वह भी उत्पात मचाते हमलावरों और जगह-जगह से बंद सड़कों के बीच से ? अभी भी उसका दिल बुरी तरह धड़क रहा था। इसी तरह वह कुछ पलों तक चुप बनी बैठी रही।

अपने घबराए दिल के थोड़ा सहज होने के बाद आँखें फैलाकर उसने कहा, "मयंक! मैं सही सलामत घर पहुँच गई । मुझे अभी भी विश्वास नहीं हो रहा है कि मैं घर पहुँच चुकी हूँ। मैं क्यों नहीं रुक गई भावना के यहाँ? यह मेरे दिमाग में क्यों नहीं आया?... शायद तुम्हारा फोन रिसीव करने के बाद मुझे यही लगा कि फौरन मुझे वहाँ से चल देना चाहिए। इससे अलग वहाँ ठहरने की बात मैं न सोच सकी। मयंक! ज़िंदगी में पहली बार मैंने हंगामा होते देखा । रास्ते में जो कुछ मैंने देखा ,उसे देखकर इस तरह सुरक्षित घर लौट आने की उम्मीद तो मुझे बिल्कुल नहीं थी। कई जगह मवालियों ने रास्ता बंद कर दिया था... और सारी दुकानें बंद हो गई थीं। कोई नहीं था सड़क पर। कहीं-कहीं गुंडे झुंड में खड़े थे । पता नहीं क्या कर देते?... अभी भी विश्वास नहीं होता कि उन सब ने मुझे जाने दिया अपनी आँखों के सामने से । वे आक्रामक हो जाते तो... कुछ भी हो सकता था।"

मयंक ने कहा, " ओह , थैंक गॉड! मैं तो बहुत घबरा रहा था। तुम आ गयी और वे आक्रामक नहीं हुए।...आज... न जाने क्या हो जाता ?"

ऋचा ने कहा , "मैं समझ रही थी मयंक, कि तुम कितना घबरा रहे होगे ! तभी तो तुमने मुझे फोन किया और फौरन आने के लिए कहा ?"

मयंक ने कहा," हाँ, मैं तो बहुत डरा हुआ था।...अचानक शहर में उपद्रव शुरू हो गया और नई गाड़ी लेकर निकली थी तुम ।आज कितनी गाड़ियाँ जला दी गई हैं शहर में... तुम्हें पता है? मुझे तो लग रहा था कि आज गुंडे-मवाली कहीं हमारी भी कार न फूँक दें!"

यह सुनकर ऋचा की दृष्टि मयंक के चेहरे पर ठहर गई। वह मयंक को एकटक देखती हुई बोली," क्या?... यह क्या कह रहे हो ?"

"हाँ ऋचा! आज गाड़ी जलने से बच गई...थैंक गॉड!"

ऋचा जैसे परकटे पक्षी की तरह जमीन पर गिरकर तड़पने लगी । वह चीख-चीखकर कर पूछना चाह रही थी, "तुम्हें अपनी गाड़ी की चिंता थी...मेरी नहीं ? और इस उपद्रव में लौटते हुए यदि मुझे... मुझे कुछ हो जाता तो ?... यदि गुंडे-मवाली मेरे साथ कुछ कर बैठते तो ?... इसका डर तुम्हें नहीं हुआ?"

पर वह कुछ बोल नहीं सकी; क्योंकि अंतस में कोई आकाशछूती इमारत ढह चुकी थी।

अंजना वर्मा

ई-102, रोहन इच्छा अपार्टमेंट, भोगनहल्ली,विद्या मंदिर स्कूल के पास, बैंगलुरू -560103

ईमेलः anjanaverma03@gmail.com